भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 23 अंक : 10 | गुरुवार, 26.10.2000 | वार्षिक चंदा : 50.00

पंजाब में उमंग-उल्लास का उत्सव !

पिछले करीब दो महिने से पंजाब का आत्मीय समाज पलकें बिछाए जिस अनमोल घड़ी की बेसब्री से राह देख कर दिन गिन रहा था; वो घड़ी आ ही गई... प.पू. गुरुजी व उनके संबंध वाले मुक्तों के दर्शन, सेवा, समागम से जैसे सभी की आत्मा को एक अनोखा सुकून मिल गया-आत्मा की प्यास संतुष्ट हुई !

काफी समय से पंजाब के मुक्तों की खूब इच्छा थी कि प.पू. काकाजी महाराज के मानसपुत्र प.पू. गुरुजी की सेरेछाया में उमंग-उल्लास से एक उत्सव करें जिसमें प.पू. काकाजी से जुड़ा उत्तर का आत्मीय परिवार इकट्ठा हो और प.पू. काकाजी की जय-जयकार की गूंज से पंजाब की भूमि गूंज उठे एवं प.पू. गुरुजी के रुप में मिली अमूल्य धरोहर के स्वरुप की हमें सही पहचान हो... 1997 में प.पू. गुरुजी की हीरक जयंती पंजाब में मनाने का वहां के मुक्तों ने प्रयास भी किया... प.पू. गुरुजी के समक्ष अपनी भावना रखी, पर प.पू. गुरुजी ने उन्हें किसी तरह समझा-पटा कर मना कर दिया... पंजाब के भक्तों ने भी प.पू. गुरुजी की आज्ञा को सिरमाथे पर लेकर सरलता का परिचय दिया। परंतु उनके दिलों में वह भक्ति अदा करने की भावना की ज्योति जलती रही...

भगवान तो भक्तों की भावना के वश हैं, सो उनकी भावना व भीतर से किये गए भजन की पुकार से आखिरकार प.पू. गुरुजी ने 30 सितम्बर से 3 अक्तुबर 2000 तक पंजाब ट्रिप का प्रोग्राम बनाया... प.पू. काकाजी महाराज द्वारा किए गए अनथक परिश्रम से आज पंजाब की भूमि पर भी एक छोटे, लेकिन भगवान को कर्ता-हर्ता मान कर दृढ़ निष्ठा से जीने वाले एक आत्मीय परिवार का सर्जन हुआ है। उनका दर्शन कराने की भावना से प.पू. गुरुजी अपने साथ करीब 200 मुक्तों को लेकर गए... पंजाब की भूमि पर जब प.पू. काकाजी ने कदम रखा, तब तो वहां स्वामिनारायण के नाम तक को कोई जानता नहीं था। परंतु प.पू. काकाजी पारदर्शी पुरुष थे। उत्तर भारत के मुमुक्षुओं की चेतना का एक अद्‌भुत विकास कराने, अपना संबंध देकर उनका श्रेय करने की उदात्त भावना से प.पू. काकाजी दिल्ली व पंजाब की भूमि पर पधारे... इससे भी अधिक जैसे जूनागढ़ के जमानती स्वयं महाराज बने और... गुणातीतानंदस्वामी को जूनागढ़ रखे थे; ठीक उसी प्रकार प.पू. काकाजी ने उत्तर भारत के मुक्तों के चैतन्य के विकास की डोर अपने पसंदीदा पात्र– प.पू. गुरुजी को सौंपी !

इसका संकेत उन्होंने सालों पहले प.पू. गुरुजी को लिखे एक आशीर्वाद पत्र में दे दिया था... **'हे आनंदस्वामिजी ! अब हरियाणा और पंजाब का उद्धार करो, उद्धार करो। वक्त पक गया है।'** (हिन्दी ब्रह्मप्रवाह-पृष्ठ,82) उनके आशीर्वाद रुप कहे ये एक-एक शब्द आज साकार हो रहे हैं। हम सब कितने भाग्यशाली हैं कि प. पू. काकाजी जैसी साक्षात् भगवान रखे पारदर्शी विभूति की नज़र में हम आ गए। उनकी करुणादृष्टि-आशीर्वाद के अधिकारी बने... करोड़ों वंदन हो प.पू. काकाजी महाराज के चरणों में...

30 सितम्बर की सुबह करीब 200 मुक्त शान-ए-पंजाब ट्रेन से लुधियाना जाने निकले... प.पू. गुरुजी शताब्दी ट्रेन से निकले... लुधियाना स्टेशन पर पंजाब के भक्तों के तो खुशी के मारे पांव ज़मीन पर नहीं पड़ते थे। उनकी भक्ति-भावना,

उमंग-उल्लास देखते ही बनता था। यूं तो करीब दो महिने से पंजाब में उत्सव की तैयारी चल रही थी... पंजाब के भक्तों की भावना के दो-तीन निम्नलिखित प्रसंग उनकी उमंग, उल्लास, भक्ति-भावना का स्पष्ट दर्शन कराते हैं।

ऐसा बड़ा उत्सव वहां करीब 18 साल के बाद आयोजित हुआ था... 1982 में प.पू. काकाजी की सेरेछाया में जगरांव की कॉलेज में एक बड़ी सभा हुई थी। पंजाब वालों की उमंग-उल्लास देख कर तो ऐसा लगता था जैसे कि किसी घर में अट्ठारह वर्ष के बाद पुत्र का जन्म हुआ हो, सो पांव खुशी के मारे जमीन पर टिकते नहीं! अपनी भक्ति अदा करने जगरांव के भक्तों ने प.पू. गुरुजी के लिए थर्माकोल की छोटी-छोटी गोलियों का एक कलात्मक हार बनाने का सोचा था... करीब 1000 से ऊपर छोटी-छोटी उन गोलियों की लड़ियाँ पिरोई... ये गोलियाँ खूब हल्के वज़न की होने के कारण पंखे की हवा से ही उड़ कर बिखर जाती थी... पर, सभी ने पंजाब की तेज गर्मी में भी पंखा बंद रख कर वे लड़ियाँ पिरोई–यहां तक कि हरिभक्त भाईयों ने भी! इस कलात्मक हार के पीछे की भावना यह थी कि प्रगट प्रभु के संबंध से सब चिंताएँ प्रभु पर छोड़ कर हम हमेशा ऐसे हल्के बन कर रहें।

जगरांव से प.भ. झांझी परिवार प.पू. गुरुजी के साथ खूब आत्मीयता से जुड़ा हुआ है... इस परिवार के लिए प.पू. काकाजी ने प.पू. गुरुजी को पहले से ही निर्देश किया था कि **यह परिवार खूब भावुक है और भविष्य में तुम्हारी खूब सेवा करेगा...** आज उनकी भक्ति-भावना व समझदारी देख कर प.पू. काकाजी के ये आशीर्वाद साकार होते दिखाई पड़ते हैं। झांझी साहेब के साले साहेब के लड़के के विवाह की तिथि 2 अक्तुबर के दिन की निकली थी। उन्होंने झांझी परिवार को यह बताने के लिए फोन किया। तो झांझी परिवार ने स्पष्ट बताया कि हम इस शादी में सम्मिलित हो ही नहीं पायेंगे। रिश्तेदारों ने पूछा कि कोई अड़चन है ? झांझी परिवार ने एकदम टोक कर कहा कि 'अड़चन' शब्द का इस्तेमाल ना करो इस बात के लिए... क्योंकि 30 सितम्बर से 3 अक्तुबर तक हमारे प.पू. गुरुजी यहां हैं। हमारे घर पर तो आप से कई गुणा बड़ी शादी है ! आखिरकार, झांझी साहेब के साले साहेब ने शादी की तारीख बदल कर 8 अक्तुबर निश्चित कर ली। 'जीवन में प्रायोरीटी संत की ही रख कर जीना है,' यह बात प.भ. झांझी परिवार ने ऐन मौके पर रख कर बताई। प.पू. काकाजी कैसी पारदर्शी विभूति होगी ?

फंक्शन के बारे दिल्ली से फोन पर प.पू. दीदी की भक्तों से बातचीत होती ही रहती थी। तो, दिल्ली से बहनों ने मज़ाक में सहज ही फोन पर कई भक्तों को कहा कि हमारी पूरी पल्टन आ रही है। पर, सभी हरिभक्त में से एक ही बात आई कि- पल्टन शब्द मत इस्तेमाल करें। आप सब जो आ रहे हैं वे तो हमारे सगे-संबंधी आ रहे हैं... हमारा कैसा अहोभाग्य ! जो हमें आप लोगों की सेवा मिल रही है। बहनें तो यह बात सुन कर स्तब्ध रह गई–क्योंकि सच में भीतर से निकले ये शब्द थे। जो ऐसा मानता होगा वो ही तुरंत ऐसी बात बोल सकता है और..... पंजाब के हरिभक्तों की वह सेवा-भावना यहां से गए सभी को स्पर्श भी कर गई कि सच में प.पू. काकाजी का इस भूमि पर किया गया परिश्रम सार्थक हुआ। ऐसी आत्मबुद्धि-प्रीति रख कर जीने वाले 'योगी परिवार' का सर्जन करने ही तो प.पू. काकाजी ने अपना समग्र जीवन जिया... धन्यवाद-धन्यवाद पंजाब के हरिभक्तों की भक्ति-भावना को व दिल से वंदन...

निश्चित प्रोग्राम के मुताबिक 30 सितम्बर को शताब्दी से प.पू. गुरुजी व शान-ए-पंजाब से हरिभक्त **लुधियाना** स्टेशन पर उतरे... लुधियाना, मुल्लापुर, जगरांव, सवद्धी के 40-50 मुक्त प.पू. गुरुजी के स्वागत के लिए स्टेशन पर आए थे... लुधियाना में प.भ. टी.डी. खुरानाजी के नए घर में फूल छांटने के पश्चात् प.पू. गुरुजी प.भ. मुंशीरामजी के लकड़ी के आरे पर पहुँचे... इतने में 200 हरिभक्त भी बसों द्वारा वहां पहुँच गए... प.भ. मुंशीरामजी ने स्नेक्स, कोल्ड ड्रिंक्स आदि की बहुत अच्छी व्यवस्था कर रखी थी। जलपान करके वहां से **सवद्धी गांव** जिसे पंजाब के सत्संग का गेटवे कहा जाता है वहां जाने निकले। यहां प.भ. दिलीपचंदजी–जो कि प.पू. काकाजी व प.पू. गुरुजी से खूब आत्मीयता से जुड़े थे उनके लड़के प.भ. सुरेशजी व परिवार ने सत्संग का वह वारसा खूब ही अच्छी तरह रखा है... प.भ. सुरेशजी प.पू. गुरुजी से बहुत नज़दीक से जुड़े हुए हैं। उनके समस्त परिवार का केन्द्र प.पू. गुरुजी ही हैं... उनके परिवार की भावना देखते ही बनती थी... प.पू. गुरुजी व हरिभक्तों के स्वागत के लिए स्पेशियल पुलिस बेन्ड मंगाया था... अपना आनंद व्यक्त करने सब नाचे-झूमे... पूरा सवद्धी गांव दर्शन के लिए उमटा हुआ था। खूब सुंदर टेन्ट लगा कर स्वागत सभा व दोपहर के खाने का प्रोग्राम था। प.पू. गुरुजी पंडाल में जाकर बैठे... सुरेशजी व परिवार ने फूलों के हार से स्वागत किया। फिर गांव के प्रधान व मानी व्यक्तियों ने प.पू. गुरुजी का स्वागत किया। भजन इत्यादि गाने के बाद प.पू. गुरुजी ने प.पू. काकाजी द्वारा पूरे सवद्धी गांव को दिए आशीर्वाद की स्मृति कराई कि–

प.पू. काकाजी बोले थे कि सवद्धी गांव के निवासी एक घर ने हमें अपना लड़का साधु होने दिया है; सो–केवल उस

परिवार का ही नहीं, बल्कि सारे गांव का उद्धार हो गया... पूरे गांव की रक्षा होती रहेगी !

हम सभी जानते हैं कि बीच के कई सालों में पंजाब में खूब आंतकवाद छाया रहा; पर आश्चर्य की बात है कि सवद्धी में ऐसा माहौल बनने के बावजूद गांव को किसी भी प्रकार ज़रा भी आंच नहीं आई !

सवद्धी से प्रसाद लेने के बाद प.पू. गुरुजी व सभी हरिभक्त **जगरांव** पहुँचे... यहां कई परिवारों ने अपने-अपने पूरे घर दिल्ली से आए हरिभक्तों के रहने आदि के लिए सौंप दिए थे... उन सभी ने भावपूर्ण सेवा करके अपना खूब साथ-सहकार दिया... सद्भावना वाले उन परिवारों को इस सेवा के फलस्वरुप प्रभु सर्वथा सुखी रखें-यही प्रभुचरणों में प्रार्थना !

जगरांव में फ्रेश होकर 'कौन बनेगा करोड़पति' सीरियल पर आधारित एक छोटे से प्रोग्राम में सभी शामिल हुए... छोटे संतों व बच्चों ने इस प्रोग्राम को खूब मेहनत से तैयार किया था... दिल्ली व पंजाब से संबंधित सत्संग के प्रश्न इस प्रोग्राम में रखे थे। प.भ. वच्छराजभाई के लड़के हृदय (पप्पू), प.भ. भद्रायुभाई के लड़के वैभव, प.भ. कौशिकभाई के लड़के कार्तिक, प.भ. नवीनभाई के लड़के आशिष, प.भ. राकेशभाई, प.भ. जयप्रकाश मल्होत्राजी के लड़के पुनीत ने इस प्रोग्राम को इतना जीवंत रुप दिया कि सभी खूब भावविभोर हो गए... इसी प्रोग्राम दौरान पंजाब के हरिभक्तों की ओर से बाहर से आए हरिभक्तों को अमृतसरी ग्लास के रुप में प.पू. दीदी के करकमलों से स्मृति भेंट दी गई।

1अक्तुबर की सुबह प.पू. काकाजी की स्मृतियों को ताज़ा करने जगरांव में प्रभात फेरी का प्रोग्राम था... जगरांव की छोटी-छोटी, टेढ़ी-मेढ़ी संकरी गलियों में प.पू. काकाजी 60 साल की आयु में सुबह कड़ाके की ठण्डी में कैसे घूमे होंगे ? इस बात को सोच कर सभी हरिभक्तों की आँखे नम हो रही थी। भगवान स्वामिनारायण व प.पू. काकाजी की जय-जयकार करते हुए बहुत ही उमंग व उल्लास से करी प्रभात फेरी से जैसे पूरा जगरांव गूंज उठा... बाबा संतासिंह की धर्मशाला–जहां प.पू. काकाजी ने पहली पारायण करी थी, वो प्रसादी की जगह पर पहुँचते ही सभी को एक अजीब-सी वाईब्रेशन्स महसूस हुई... वहां नज़दीक ही जिस चौक पर–जहां स्वयं प.पू. काकाजी भक्तों के साथ नाचे थे; पुराने जोगी उसी स्मृति में डूब कर जैसे अपनी सुधबुध भूल गए और जैसे प.पू. गुरुजी के रुप उनके साथ प.पू. काकाजी ही प्रगट हैं–दोबारा प.पू. काकाजी ही आए हैं, इसी भाव से बहुत ही नाचे। जिसे देख कर एक बार तो प.पू. गुरुजी की आंखें भी नम हो गईं। प्रभात फेरी के दौरान प.भ. पुरीजी (पुरी स्वीट वाले), प.भ. अशोकजी व गिरधारी सोप फैक्टरी वालों ने सभी हरिभक्तों के लिए जलपान व अल्पाहार की खूब अच्छी सेवा करी...

प्रभात फेरी के बाद नाश्ता करके सभी भक्त शाम को होने वाली सभा के लिए फूल तोड़ने आदि की सेवा में जुट गए... फिर दोपहर को सवद्धी वाले सुरेशजी के साले साहेब नरेशजी–जिन्हें सभी मामाजी के नाम से जानते हैं–के घर **मुल्लापुर** में दोपहर के प्रसाद का प्रोग्राम था। वे करीब एक-डेढ़ साल से ही परिचय में आए हैं। पर, एक निजी आत्मीय परिवार की भांति जुड़ गए हैं। वहां दिन में आतिशबाजी छोड़ कर उन्होंने अपना आनंद व्यक्त किया ! फूलों से सुसज्जित गेट युक्त खूब सुन्दर पंडाल में प.पू. गुरुजी व भक्तों के बैठने, खाने की व्यवस्था बहुत भक्तिभाव से करी थी... मुल्लापुर के कई नए प्रतिष्ठित व्यक्ति भी वहां उपस्थित थे। सो, प.पू. गुरुजी ने जीवन में हर प्रकार से समृद्ध होने भगवान रखे संत की अत्यधिक आवश्यकता बताती बात को समझाते हुए थोड़ी बातें करी... बाद में सभी ने प्रसाद लिया... यहां मामाजी व परिवार ने अपने रिश्तेदारों को स्पष्ट कहा कि अगर आप सब हमारी शाम की सत्संग की सभा में नहीं आओगे तो हमारा आपसे कोई रिश्ता नहीं रहेगा और हम फिर आपके किसी फंक्शन पर नहीं आएंगे... धन्य हैं कि थोड़े ही समय में परिचय में आए भक्तों के सत्संग के प्रति के ममत्व को...

दोपहर के प्रसाद के बाद मुल्लापुर गांव में ही प.भ. झांझी साहेब के श्रेडर (चावल की फैक्टरी) पर आईसक्रीम का प्रोग्राम था। झांझी परिवार ने श्रेडर पर आईसक्रीम, कॉफी, चाय, स्नेक्स, मिठाई इत्यादि रख कर जैसे पूरा अपना दिल का भाव उड़ेल दिया था। 'भक्तों के लिए क्या कर दें ?' ऐसी भावना पूरी तरह से छलक रही थी। प.पू. गुरुजी भी बहुत आनंद में जैसे भक्तों की भावना के अधीन मूर्ति का सुख दे रहे थे। ना कोई थकान, ना कोई जल्दबाजी... जैसे भक्तों के परिश्रम को भीतर ही भीतर समझ कर भक्ति का फल लुटा रहे हों...

प.भ. झांझी साहेब के श्रेडर से वापिस सब जगरांव के लिए निकले; क्योंकि शाम को 6:00 से 9:00 जगरांव के **दीपक पैलेस** में सत्संग सभा का प्रोग्राम था... दिल्ली के प.भ. अनिलजी, प.भ. आशिष, पुनीत, पिन्टु के साथ पंजाब के प.भ. सोमनाथ कत्यालजी, गौरव शर्मा, अन्नू, विराट, अशोक चान्दला, सलिल थापर तथा अन्य बच्चों ने दिन-रात एक करके वहां डेकोरेशन किया था। मेईन रोड से ही दीपक पैलेस आज अनोखा ही सुंदर रुप लिए हुए था। बाहर हंस की डेकोरेशन वाला 'मैत्री द्वार' सुशोभित हो रहा था... आगे जाकर दूसरे गेट–'ब्रह्ममहोल' पर सत्संग की नींव समान

सूत्र **'भगवान के भक्त में आत्मबुद्धि– यही सत्संग है।'** यह लिखा हुआ था। अंदर भव्य स्टेज पर बीच में अक्षरपुरुषोत्तम महाराज, दांयी ओर गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज व योगीजी महाराज... बांयी ओर प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की लाईफ साईज़ मूर्तियाँ थी... पूरा दिल्ली-ताड़देव मंदिर का ही दृश्य जैसे जीवंत हो उठा था... स्टेज के मध्य में प.पू. गुरुजी विराजमान थे... संजोगवश ही पू. कांतिकाका के पुत्र पू. घनश्यामभाई अमीन का अचानक ही दिल्ली कुछ व्यापार के सिलसिले में आना हुआ... प.पू. गुरुजी के कहने से पंजाब ट्रिप में वे साथ आए... वे भी प.पू. गुरुजी के साथ स्टेज पर बैठे थे... यह खूब सांकेतिक था कि पू. कांतिकाका को प.पू. काकाजी **'पंजाब का सेनापति'** कहते... आज पू. घनश्यामभाई मानो पू. कांतिकाका का ही प्रतिनिधित्व कर रहे थे। प.भ. वच्छराजभाई, लुधियाना के प.भ. गुरुबक्षसिंहजी, सवद्धी के प.भ. सुरेशजी, प.भ. रमेश मास्टरजी, प.भ. राकेशभाई इत्यादि ने प.पू. काकाजी व प.पू. गुरुजी द्वारा हुए अनुभव- बहुत ही भावपूर्ण एवं सादी भाषा में दिल के उद्‌गार व्यक्त किए..... फिर भजन व हारविधि का प्रोग्राम होने के बाद सब प.पू. गुरुजी की आशिष पाने के लिए लालायित थे।

बैनर वगैरह लगा कर भीड़ इकट्ठी करने के लिए प.पू. गुरुजी ने पहले से जगरांव के भक्तों को मना कर दिया था। उन्होंने खास सूचना भेजी थी कि–

सिर्फ आयाराम-गयाराम वाला सत्संग करने-भीड़ इकट्ठी करने शो-शॉ करने हमें फंक्शन नहीं करना है... प.पू. काकाजी से जुड़े पुराने जोगी और श्रद्धा व विश्वास से प्रभु का आधार लेकर जीने इच्छुक गिने-चुने थोड़े ही लोग भले हों... वही अपना असली उत्सव है।

जगरांव के हरिभक्तों ने भी प.पू.गुरुजी की यह आज्ञा खूब अच्छी तरह पाली... प.पू. गुरुजी ने भी स्टेज पर से देखा कि सभा में प.पू. काकाजी से जुड़े पुराने जोगी बहुत ही श्रद्धा-विश्वास से-सचमुच कुछ पाने की लालसा से ही बैठे हैं। सिर्फ गाड़ियाँ-टेम्पो व ट्रैक्टर भर-भर कर एक समूह मेला आया हो-खाली फोर्मली आए हों, ऐसा गेधरिंग नहीं लगा; तो प.पू. गुरुजी ने भी जैसे प.पू. काकाजी कहते थे कि–जैसा ग्राहक वैसा माल... यूं वचनामृत मध्य-21- **'मुद्दे का'** वचनामृत को समझाते हुए प्रगट प्रभु की निष्ठा की, सर्वोपरिपन की, प्रभु को ही कर्ता-हर्ता, प्रेरक मान कर जीने की बातें करीब सवा घंटे तक करी....

प.पू. गुरुजी के साथ दिल्ली से आये कई निजी हरिभक्तों को यहां तक विचार आ गया कि आज जनरल सभा में प.पू. गुरुजी इतनी ऊँची व गहराई की बातें कर रहे हैं... ये बातें भला किसे समझ में आयेगी ? पर, प्रभु के संत का गणित अलग ही होता है ना ! पूरे हॉल में एकदम शांति छाई हुई थी। सब को ऐसा ही लग रहा था कि ये बातें सुनते ही रहें-सुनते ही रहें। जबकि देर हो चुकी थी। ये जो जेनट्री सभा में बैठी थी, उसमें कई प.पू. काकाजी से जुड़े आत्मीय परिवार व कई अन्य नए कोई न कोई निष्ठावान मुक्त से जुड़े थे... वही देख कर प.पू. गुरुजी ने इतनी गहराई की बातें करी ! अगले दिन जब ये मेसेज आते रहे कि ऐसी बातें तो हमने पहली बार सुनी... ये तो निराली अक्षरधाम की बातें थी। एकदम नया ज्ञान था। मुमुक्षुओं की चेतना को जाग्रत कर रहा था... आत्मा की प्यास बुझा रहा था।

करीब ग्यारह बजे सभा समाप्त हुई... सभी के मुखमंडल पर खूब खुशी थी–जैसे कि इस उत्सव में आने से स्वयं को कुछ अनमोल खजाना मिल गया। सभी प्रसाद लेते-लेते भी यही बातें कर रहे थे कि–

जीवन में आज तक ऐसा फंक्शन नहीं देखा... ये बातें भी यहीं सुनी... सच में आज तो आनंद आ गया। सभी अपने अंतर में चिरस्मरणीय स्मृतियाँ लेकर विदा हुए !

2 अक्तुबर की सुबह प.पू. काकाजी के अल्प परिचय में आए प.भ. रामलालजी के पुत्र प.भ. अशोकजी जो कि जगरांव में देसी घी की मिठाई व लस्सी के लिए प्रसिद्ध हैं व प.पू. गुरुजी के प्रति बहुत भाव है, उनकी ओर से छोले-पूरी व लस्सी का भारी नाश्ता था। सब हरिभक्तों ने नाश्ता करके जगरांव वालों से विदाई ली और सीधे अमृतसर के लिए रवाना होने के लिए बसों में बैठे... प.पू. काकाजी से जुड़े आत्मीय स्वजनों की भावना पूरी करने प.पू. गुरुजी व उनके साथ दो-तीन गाड़ियाँ **मोगा** जाने निकलीं।

मोगा में प.भ. बिहारीलालजी, डॉ. दिनेश कक्कर, मैडम इन्दिराजी, प.भ.पवन शर्मा, प.भ.अमृतलाल अग्रवालजी (पानीपत वाले प.भ. पुनीतजी की ससुराल)- इन सभी हरिभक्तों के भाव को पूरा करके प.पू. गुरुजी अमृतसर जाने निकले। बसों व कार द्वारा सभी अमृतसर करीब पौने चार को पहुँचे। अमृतसर में प.भ. ओमप्रकाश कालियाजी व उनके साथ पू. सुनीता दीदी का परिवार बहुत बेसब्री से करीब चार-पांच घंटे से इन्तजार कर रहा था... प्रोग्राम के मुताबिक सभी दोपहर 12:00 बजे तक अमृतसर पहुँचने वाले थे... पर, सारा प्रोग्राम लेट हो गया।

वहां सभी ने खाना खाया और प.भ. कालिया साहेब को साथ में लेकर सभी **'वाघा बोर्डर'** पर 'ध्वज समारोह' देखने गए। प.भ. कालिया साहेब ने पहले से ही इज़ाज़त ली हुई थी व ब्रिगेडियर नासा साहेब भी साथ में थे–सो, सभी ने खूब करीब से भारत व पाकिस्तान के बोर्डर के बीच होते 'ध्वज समारोह' को देखा।

प.भ. कालियाजी एवं जगरांव वाले प.भ. पीताम्बर शर्मा, प.भ. महेन्द्र जयस्वाल, प.भ. राजेश गुप्ताजी (गोगीजी) आदि ने मिल कर भक्तों के रहने की व्यवस्था पिम्टी कोम्पलेक्स व अमृतसर के शिवाला मंदिर- ये दो स्थानों पर करी थी...

पिम्टी कोम्पलेक्स के प.भ. बेदी साहेब व परिवार की भावना देखते ही बनती थी... बेदी परिवार व उनका सारा स्टाफ इतने अधिक अपनेपन से-इतनी भावना से सेवा में लग गया था कि ऐसा लगता था कि पूर्व के ऐसे बलिष्ठ मुमुक्षुओं को अपना संबंध देने ही प.पू. गुरुजी जैसे सत्पुरुषों का विचरण होता है। काफी विशा ल जगह में बने पिम्टी कोम्पलेक्स में प.पू. गुरुजी के स्वागत के लिए प.भ. बेदी साहेब ने खास लाईटिंग करवाई थी... बेदी साहेब व परिवार ने तो प.पू. गुरुजी व भक्तों के लिए अपना पूरा घर खुला सौंप दिया था। बेदी साहेब के परिवार को देख कर ऐसा नहीं लगता था कि वे नए परिचय में आए हों...3 अक्तुबर की सुबह प.पू. गुरुजी को बेदी साहेब अपने घर पर भी ले गए। प.भ. कालिया साहेब ने शिवाला मंदिर में कई प्रतिष्ठित लोगों को प.पू. गुरुजी के दर्शन के लिए बुलाया था... छोटी-सी सत्संग सभा का आयोजन था जिसमें पहले भजन गाये और... प.पू. गुरुजी का हार इत्यादि पहना कर स्वागत किया व प.भ. कालियाजी तथा उनके साथ आए प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने एवं शिवाला मंदिर के ट्रस्टीयों ने प.पू. गुरुजी का आभार प्रगट किया... तत्पश्चात् सभी ने प.पू. गुरुजी के आशीर्वाद प्राप्त किए... वहां से हल्का नाश्ता करके सभी स्वर्ण मंदिर, जलियांवाला बाग व दुर्गीयाना मंदिर दर्शन करने गए। दोपहर को वापिस आकर सभी ने अमृतसरी नान-कुलचे व छोले का प्रसाद लिया और करीब 1:30 बजे अमृतसर स्टेशन जाने निकले क्योंकि शान-ए-पंजाब ट्रेन से वापिस दिल्ली आना था। प.पू. गुरुजी शताब्दी ट्रेन से आने वाले थे। प.पू. गुरुजी, पू. सुनीता दीदी के यहां दोपहर का आराम करने गए। वहां विश्राम करके प.पू. गुरुजी प.भ. कालिया साहेब के यहां होकर स्टेशन पहुंचे। अमृतसर स्टेशन पर प.भ. कालियाजी, पू. सुनीता दीदी व परिवार, प.भ. बेदी साहेब व परिवार, डॉ. तिलकराजजी व अन्य हरिभक्तों ने भावभीनी विदाई दी।

<u>लुधियाना</u> का आत्मीय मंडल भी अपनी भक्ति अदा करने में पीछे नहीं रहा... लुधियाना से प.भ. प्यारेलालजी, प.भ. गुप्ताजी, प.भ. राकेशजी, प.भ. रमेश रामपालजी व परिवार शान-ए-पंजाब ट्रेन पर सभी हरिभक्तों के लिए शाम का खाना लेकर स्टेशन पर पहुँचे थे। जगरांव से भी झांझी परिवार व अन्य भक्त दिल्ली के हरिभक्तों को मिलने-विदा करने खास आए। हरिभक्तों को विदा करने के बाद भी लुधियाना-जगरांव के मुक्त स्टेशन पर ही प.पू. गुरुजी की राह देखने करीब दो-ढाई घंटे बैठे रहे। प.पू. गुरुजी की ट्रेन पहुँची तो लुधियाना के हरिभक्तों ने प.पू. गुरुजी को भी रास्ते के लिए पाथेय दिया... रास्ते में सभी के भक्तिभाव को याद करते-करते रात को करीब 11:00 बजे सभी दिल्ली आ पहुँचे।

यूं एक ओर पंजाब के हरिभक्तों का सालों के बाद मनोरथ पूरा हुआ तो दूसरी ओर दिल्ली के व अन्य मुक्तों ने पंजाब में प.पू. काकाजी द्वारा किए गए अनथक परिश्रम से तैयार एक छोटा परंतु भक्तिभाव, सेवा-भावना युक्त समाज को मन ही मन नमन किया... इस उत्सव के फलस्वरूप दिल्ली व पंजाब के भक्तों की आपस की आत्मीयता भी बढ़ी... सच ! प.पू. काकाजी हमें कैसे दिव्य समाज व मुक्तों की भेंट देकर गए हैं...

जगरांव में हुए इस अद्‌भुत उत्सव को साकार रुप देने में जैसे–

प.भ. मोहनजी ने अपने चावल के श्रेडर पर डेकोरेशन इत्यादि का सामान रखने व तैयार करने की सुविधा करी;
प.भ. अशोक शर्माजी व सौ. आदर्श भाभी ने एक महीने से डेकोरेशन की तैयारी कर रहे युवकों के लिए खाने व रहने की व्यवस्था खूब आत्मीयता से करी।
पंजाब के ट्रिप के तीनों दिन प.भ. श्यामसुन्दरजी ने फोटोग्राफी व विडियो की सेवा बखूबी करी,
प.भ. कुलवंतसिंह ने ट्रांसपोर्टेशन में खूब सेवा करी।
प.भ. झांझी साहेब, प.भ. मुंशीरामजी, प.भ.रमेश मास्टरजी, प.भ. महेन्द्र जयस्वालजी, प.भ. गोगीजी, प.भ. सुशीलजी (दाल वाले), प.भ. दलजीतसिंहजी, प.भ. कर्मचन्दजी, प.भ. प्रेमजी, प.भ. पीताम्बर शर्माजी, प.भ. अमरचंदजी, प.भ. मनोहरलालजी, प.भ. रमेशजी (तेल वाले), प.भ. अनुपजी, प.भ. लवलीजी, प.भ. गगन खन्नाजी, प.भ. अनिल कतियालजी-ऐसे अन्य कितने ही हरिभक्त...

किस-किस का नाम लिखें वो प्रश्न होता है। क्योंकि– सभी ने सेवा में-मौका लूट लेने में अपनी पूरी शक्ति-तन, मन, धन से लगा दी थी। सभी की भावना शब्दो में व्यक्त करना मुश्किल है। उसे तो केवल महसूस ही किया जा सकता है।

अंत में- 'दीपक पैलेस' के मालिक प.भ. सुभाष मलिकजी को भी बहुत-बहुत धन्यवाद कि उन्होंने इस फंक्शन को सफल करने में पूरा सहयोग दिया।

✡ ✡ ✡ ✡ ✡

'श्रवण, मनन और निदिध्यासन'

✷ 26जनवरी 1986 के महामंगलकारी दिन-विद्यानगर ज्योत के प्रांगण में प.पू. काकाजी ने ये जो बातें करी; उसमें उनकी कोई निजी महत्वाकांक्षा या स्वार्थ नहीं था। बस, किस तरह हमारा श्रेय हो वही एकमात्र भावना से वे हमारे पीछे लगे रहे।

✷ हमारी वृत्तियाँ-स्वभाव का दर्शन करा कर, उन्हें निकालने के लिए किस समय क्या करना-वो संत अरेन्ज करते रहते हैं। प.पू. पप्पाजी इसे अलग ढंग से कहते हैं कि हमारे ही प्रारब्ध और हमारी ही प्रकृति यूज़ करके हमारे विकास के लिए संत प्रयत्नशील रहते हैं।

✷ हमें कोई साधना नहीं करनी। असल में हमारी साधना हमारे गुरु ही करते हैं। यह हम्बलनेस की बात नहीं, हकीकत है। वे हमारे आगे-पीछे रहते हैं। उनके द्वारा खड़े किए प्रसंग पर हमें सिर्फ उनकी अखंड हाज़िरी मान कर-जाग्रत रहकर—**सावधानी रख कर** जिया करना है।

✷ ब्रह्मरुप होकर ही परब्रह्म की भक्ति करी जा सकती है। भक्ति यानि—सेवा ! संस्कृत में लिखा है '**भक्ति सेवायाम्**' भगवान की सर्वोच्च सेवा एक ही है कि उसकी मूर्ति को अखंड धार कर रखें—उनके रहने का हम घर बन जाएं। प्रभु हमारे भीतर निवास करके रहें वैसा यदि हम माहौल बना दें, प्रभु को रहने का ठिकाना दे दें तो वे कितने खुश हो जायेंगे कि अहोहो मुझे रहने का ठिकाना दे दिया... प.पू. काकाजी इसी एक ही बात पर लगे रहते कि मूर्ति सिद्ध कर लो...

✷ योगीजी महाराज का साधु बनाने का एक ही मकसद था कि हम गुणातीत भावना वाले साधु बनें। उन्होंने कभी भी यह नहीं कहा कि बड़े-बड़े मंदिर बनाने हैं। अक्षरभुवन में संतों को उन्होंने आशीर्वाद भी कैसे भव्य दिए कि सभी को शास्त्रीजी महाराज जैसे बनाने हैं... 40 जागास्वामी-भगतजी जैसे बनाने हैं। योगीजी महाराज कैसी विभूति होगी ? बापा दंभ-आडंबर करें या बड़प्पन दिखायें ऐसे साधु नहीं थे।

✷ प.पू. काकाजी के शब्दों में-वैभवशाली सत्संग के झूले में तो हम 200 साल से झूलते आ रहे हैं। बड़े मंदिर हों, शिविरों में हजारों-लाखों लोगों का गेधरिंग हो... हॉस्पिटल आदि खोलें-यह बापा की योजना नहीं थी।

✷ जब तक देहभाव है भेदभाव रहेगा ही। इसलिए योगीगीता में लिखा है कि अपने आपको प्रत्यक्ष ब्रह्मस्वरुप मानें। पर, अपने भीतर में दोष-वृत्तियाँ, स्वभाव देखने पर माना नहीं जाता। विश्वास से मानें कि अपने यहाँ यह हो पायेगा। क्योंकि ब्रह्मस्वरुप संत अपने यहां प्रगट हैं और उन्होंने हमें अपनी गोद में लिया है। यह बात हम सुनते आए हैं लेकिन मानते नहीं हैं। यही सारी झंझट है, अगर यह रहस्य समझ में आ जाए तो ?

✷ गुणातीत स्वरूपों की बातें जब भी सुनें या पढ़ें तो उन्हें यूं नहीं लेनी चाहिए कि ये बातें तो फलां पर करी है... फलां बैठा था इसलिए यह बात करी है। इसके बजाय मेरे पर ही बात करी है—मुझे ही बात कर रहे हैं, मुझे ही समझनी है... यूं लेंगे तब इन बातों के मर्म को पकड़ पायेंगे... वर्ना बात ऊपर से चली जायेगी।

✷ **सिपाही व सैनिक में फर्क** :-
चौराहे पर खड़ा होकर जो ट्राफिक कन्ट्रोल करता हो, पर फिर रिश्वत देने पर हमें छोड़ दे... वैसे ही मन के चोर के साथ अपना फिक्सिंग कर दें—वह सिपाही...
कैसे संजोगों में भी रिश्वत में फंसे ही नहीं... मन के साथ कभी कोई कम्प्रोमाईज़ ही ना करे—वो सैनिक।

✷ भगवान के भक्तों के पक्ष में जो खड़ा रहे; उसके वश में भगवत्स्वरूप संत और भगवान हमेशा के हो जाते हैं... उसे कहना नहीं पड़ता-प्रार्थना नहीं करनी पड़ती कि मेरा यह काम कर दो... भगवान को करना ही पड़ता है। क्योंकि—उसके भक्त का तुमने पक्ष रखा है। **प.भ. हंसराज मदानजी ने आऊट ऑफ धी वे जाकर यह किया है, तो इसके फलस्वरूप प.पू. काकाजी उसे निहाल-निहाल कर देंगे।**

✷ प.पू. काकाजी कहते हैं कि यह ब्रह्मनियंत्रित समाज है। अगर किसी में दोष-कसर नज़र आती है, तो महाराज ने वह उसकी तरक्की-विकास के लिए रखी हुई है।
सब मुक्तों पर नियंत्रण प्रभु का है।
यूं मान कर मुक्तों को ऐसे निर्दोष मानेंगे तो हम निर्दोष हो जाएंगे। सद्भावना रख कर के ऐसे **बड़े संतों को निर्दोष मानेंगे, तो हम वासना रहित हो जाएंगे। मुफ्त में वासनामुक्त हो जाएंगे।** और... **मुक्तों को दिव्य मानेंगे तो हम स्वभावरहित हो जाएंगे।**

✷ भगवान के भक्तों की जब तक झंझट करते रहेंगे तब तक हम फेल...

✷ गुरुहरि योगीजी महाराज कहते कि—हमारा हम अखंड अक्षरधाम में ही बैठे हैं—क्योंकि महाराज मानवस्वरूप में ऐसे संत द्वारा यहां विराजमान हैं। इस दर्शन से ही हमारा पूरा हो गया।
ऐसा मानते हैं क्या ? वह क्या कि जिन्हें मर कर पाना था वे हमें जीतेजी मिले हैं।

✡ ✡ ✡ ✡ ✡

विश्वमंच पर प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज द्वारा श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की जय जयकार.....

विश्व इतिहास की सुवर्ण क्षण....यूनो की विश्वशांति शिखिर परिषद् में प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज द्वारा श्री अक्षरपुरुषोत्तम की जय जयकार...

'पत्ता-पत्ता स्वामिनारायण बोलेगा.....' करीब 200 साल पहले **मूल अक्षरब्रह्म गुणातीतानंदस्वामी** ने ये आशीर्वचन दिये .....

1953 में स्पेश्यल ट्रेन द्वारा किये यात्रा प्रवास दौरान **ब्र.स्व. योगीजी महाराज** ने उज्जैन में कहा –

' दो सौ साल में श्रीजी महाराज (भगवान स्वामिनारायण) की महिमा ऐसी बढ़ जायेगी कि पाँच हजार साल का सब भूल जायेंगे...'

और इसी तरह जुलाई 1978 में **प.पू. काकाजी महाराज** ने आशीर्वाद पत्र में पू. गुरुजी को लिखा कि–

' हम,अक्षरपुरुषोत्तम के गुणातीतज्ञान वाले –वह विश्वधर्म हुआ...' जबकि उस समय अक्षरपुरुषोत्तम सम्प्रदाय गुजरात, काठियावाड़ और महाराष्ट्र में नासिक तक ही सीमित जैसा कहा जाये।

कैसी पारदर्शी विभूतियां होगी ? सच, आज यह गौरव ऐसी विभूतियों के आशीर्वाद कहो या संकल्प के फलस्वरुप प्राप्त हो रहा है।

धन्य-धन्य 2000 की 29 अगस्त का मंगलकारी दिन... विश्व इतिहास में यह दिन सुवर्ण अक्षरों में अविस्मरणीय दिन बन कर अंकित रहेगा। इसी दिन लाखों हृदय के प्राणाधार रूप–गुरुहरि योगीजी महाराज के अखंड धारक **प.पू. प्रमुखस्वामी महाराज** ने हिन्दु धर्म के सरताज बन कर संयुक्त राष्ट्र संघ के विश्व मंच पर अध्यात्मदर्शन के मूल में एकता को दर्शाई और परस्पर प्रीति द्वारा शांतिपूर्ण विश्व के सर्जन का मार्ग प्रशस्त किया।

यूनो–संयुक्त राष्ट्र संघ ने इस वर्ष 'सहस्त्राब्दी विश्व शांति संसद' का आयोजन किया था, जिसमें विश्व के 54 देशों के 1800 धर्मगुरु-प्रतिनिधि पधारे थे।

परिषद् के पहले दिन विश्वधर्मों की प्रार्थनाएं मुख्य मंच पर बोली गई। हिन्दु धर्म के वैदिक मंत्रों व प्रार्थनाओं की गूंज के साथ जब स्वामिनारायणीय संतों ने भावपूर्ण मधुरकंठ से स्वामिनारायण महामंत्र की धून गाई तो जैसे कण-कण जीवंत हो उठा। सारे वातावरण में जैसे कोई अनोखी दिव्य शांति छा गई.... उपस्थित सभी महानुभाव दिव्य अनुभूति से ओतप्रोत हो गए।

सत्र के दूसरे दिन हिन्दु धर्म का प्रतिनिधित्व करने प.पू. प्रमुखस्वामी महाराज पंच पर पधारे... दिव्य मुखारविंद, नम्रता से दो हाथ जोड़े हुए और पाघ सहित सिर सभी के सम्मुख वंदना करते हुए झुक गया। स्वामीश्री की यह नम्रता सभी को छू गई।

स्वामीश्री रोस्टम के आगे पधारे और यूनो के सभागृह में इतिहास में सबसे पहली बार स्वामीश्री ने 'गुणातीतोऽक्षरं ब्रह्म.....' श्लोक के गान के बाद सभी को वंदन किया और गुजराती भाषा में खूब मननीय संबोधन करते हुए कहा–

'' सभी धर्मों के बीच संवादिता और सामंजत्य हो वह आज के युग की अत्यंत महत्त्व की जरुरत है। इस हेतु धर्मगुरुओं को एक- दूसरे के साथ आत्मीयता से विचार-विमर्श करना चाहिए... सो ही हम कहते हैं कि– 'परस्पर प्रीति प्रसराए वह धर्म'...

हर एक धर्म को टिकने देना चाहिए। उन्हें अपने-अपने तरीके से विश्व की सेवा करने देना चाहिए। मानव इतिहास के इस मोड़ पर हम धर्मगुरुओं को ऐसा नहीं होना चाहिए कि विश्व में सिर्फ हमारा धर्म ही हो, परन्तु हमें स्वप्न देखना चाहिए कि इस विश्व में सभी धर्म संप से रहें....

वेद कहते हैं कि ' अमृतस्य पुत्राः वयम् '– हम सभी परमात्मा के पुत्र हैं। भगवान स्वामिनारायण कहते हैं – ' हम सभी आत्मा हैं; नात, जात, देश से पर हैं' और हमारे गुरु योगीजी महाराज भी कहते कि– 'मेरा–वह अच्छा ऐसा नहीं, बल्कि जो अच्छा–वह मेरा...' गुरु की दूसरी एक भावना ऐसी भी थी कि–'भगवान सभी का भला करो।' उसमें कोई नात-जात का भेद के बिना हर एक धर्म के किसी भी मनुष्य का अच्छा हो, भला हो ऐसी वे हमेशा इच्छा करते और ऐसा ही उनके वर्तन में भी हमें देखने मिला है...

धर्मगुरु ही अनुयायीओं के जीवन को घड़ सकते हैं। धर्म का सच्चा विकास आंकड़ों के जोड़ में नहीं; लेकिन हर एक अनुयायी की जीवनशुद्धि और उनके आध्यात्मिक उत्कर्ष में है। अनुयायीओं की संख्या मात्र बढ़ाने की अपेक्षा इस गहराई का महत्त्व अधिक है। इसलिए ही हर एक धर्म का अनुयायी निजी धर्म का सच्चा अनुयायी

बने। तो फिर, हमारा विश्व एक अधिक सुंदर विश्व बन सकता है। इसके लिए हमें अनुयायीओं को जनून से बिल्कुल दूर रख कर श्रद्धा और सदाचार पर केंद्रित करना चाहिए...

भगवान स्वामिनारायण ने प्रेम और भक्ति के माध्यम से निःशस्त्र क्रांति द्वारा लोगों का जीवन पलटाया था... हम सब साथ मिल कर कार्य करेंगे तो बहुत बड़ा वास्तविक परिवर्तन ला सकेंगे...

भगवान स्वामिनारायण ने सभी धर्मों को स्पर्श करती धर्म की व्याख्या करी है। उन्होंने कहा है कि– 'सदाचार– यह धर्म है।' हर एक के जीवन में यदि सदाचार होगा तो विश्व में शांति स्थापित होगी... हमारे अनुयायीओं को यह सीखाना चाहिए कि–दूसरों के प्रति सहिष्णु हों और आदर भी दें। हम खुद भी जीयें और दूसरों को भी जीने दें। संवादिता के साथ अपनी गुंजाइश के मुताबिक परस्पर सहकार भी दें। किसी को नष्ट करके हमारे उन्नति न चाहें। क्योंकि दूसरों की भलाई में हमारी भलाई है। दूसरों के उत्कर्ष में हमारा ही उत्कर्ष है और दूसरों के आनन्द में हमारा ही आनन्द है।

ये आयोजकों, यूनो और विश्व के समस्त लोगों को भगवान और पृथ्वी पर अवतरित सभी संतपुरुषों के आशीर्वाद मिलें। भगवान स्वामिनारायण का एक संदेश यह था कि– सर्व जीव हितावह, सभी का अच्छा हो, सभी का भला हो। उन्हें कोई भेद-भाव नहीं था। इसलिए कहा है कि– 'जहां देखो वहां रामजी'। यानि–हर एक को यदि हम आत्मा की दृष्टि से देखें, हर एक में आत्मा-परमात्मा को देख पायें तो सभी का भला होगा, अच्छा होगा और सभी धर्मों की एकता बनेगी...

आज के प्रसंग पर यह विचार जो आया है, वह खूब आनंद का है और उसके मुताबिक हम सभी के विचार मिलें तो खूब अच्छी शांति दुनिया में आ सकेगी। उसके लिए भगवान को प्रार्थना है.....

स्वामिश्री के आशीर्वाद समाप्त होने पर हॉल में उपस्थित सभी ने तालियों की गड़गड़ाहट से स्वामीश्री को बधाई दी। यूं नई सदी के आगमन को बधाई देने के लिए यूनो, न्यूयोर्क में आयोजित 'मिलेनीयम विश्वशांति परिषद्' में हिन्दुत्व का शानदार प्रतिनिधित्व करते हुए परम पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज ने जैसे कि भारतीय संस्कृति की आभा बिछा दी थी।

सच में इस संभाषण द्वारा प्रमुखस्वामी ने मात्र स्वामिनारायण धर्म ही नहीं; परन्तु समग्र हिन्दु दर्शन के सारतत्व को विश्व के समक्ष प्रदर्शित किया है। पूरे स्वामिनारायण संप्रदाय के लिए यह अत्यंत गौरव का विषय है..... जीवमात्र के कल्याणकारक श्रीजी महाराज की अखंड धारक आध्यात्मिक विभूति के अच्छे स्वास्थ्य व दीर्घायु के लिए भगवान स्वामिनारायण के चरणों में अंतर की प्रार्थना !

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 29.10.2000	रविवार	–	भैयादूज
(2)	दि. 1.11.2000	बुधवार	–	लाभपंचमी
(3)	दि. 7.11.2000	मंगलवार	–	प्रबोधिनी एकादशी-तुलसी विवाह, व्रत
(4)	दि. 22.11.2000	बुधवार	–	एकादशी, व्रत

TO,

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Monthly Magazine
Despatched on 25/26 of every month
If undelivered please return to :—
Owner, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
'Tardeo', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
B-351, Sect.-I, Rohini, Delhi-85
Printed at : **Bharat Packaging and Allied Industries**
C-2/12, Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110 064
Tel.: 5401210, 5402393